गोपाल राजू की पुस्तक
''मंत्र-जप के रहस्य''
का सार-संक्षेप

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
सम्पादक ''भारतीय अनन्त दर्शन''
ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र (रजि.)
30, सिविल लाईन्स, रुड़की - 247 667
Website: www.astrotantra4u.com

क्या हम हिन्दु हैं

वन-उपवन सब समाप्ति के कगार पर हैं। सबको आज आर सी सी (रेत, सीमेन्ट, कंकरीट, स्टीलादि) के जंगलों के मशीनीकरण तथा आधुनिकता की होड़ की आपाधापी ने निगल लिया है। भौतिकवादी इस हवस भरी दौड़ में प्राकृतिक रुप से सृजित हो रही ऊर्जा अपना संतुलन नहीं रख पा रही है। परिणाम सब कोई देख और भोग रहे हैं- ईर्ष्या, द्वेष, हवस, हैवानियत, हिंसा, रोग, मानसिक संत्रास तथा प्रकृति और प्राकृतिक नियमों से दूर भागने की प्रवृत्ति आदि। इन सबसे अधिक विकराल रुप लिया है दरिद्रता ने। कोई मन अथवा अभौतिक रुप से दरिद्र है तो कोई भौतिक शरीर की आवश्यकताओं से। इस सबका मूल कारक है, प्रकृति तथा प्रभु प्रदत्त घटकों का तिरस्कार, परम सत्ता में विश्वास तथा आस्था का अभाव। सीधे-सीधे शब्दों में धर्म, संस्कार तथा सनातनी नियमों से पलायन करना। ईश्वर को तो हमने आज इच्छा पूर्ति करने वाली एक मशीन समझ लिया है। हमने यह भ्रम भी पाल लिया है कि वह महा स्वार्थी तथा

लालची है। वह निम्न स्तर की चापलूसी पसन्द करने वाला है। राजा–महाराजाओं की तरह यदि हम उसकी प्रसाद, पान–सुपारी, इलाइची, फल, मिठाई तथा वस्त्र अलंकरण आदि नाना प्रकार से चापलूसी करेंगे तो फूलकर कुप्पा हो जाएगा और हमें धन–धान्य, सुख, समृद्धि तथा सौभाग्य से मालामाल कर देगा। एक समाज विशेष में तो आप स्वयं भी लोगों को नौकर की तरह उससे कार्य करवाने के लिए बड़बड़ाते हुए प्रायः सुन सकते हैं, 'ठाकुर जी दुकान चलासी .....' , 'ठाकुर जी बिक्री करासी......' , 'ठाकुर जी वर्षा करासी......' , 'ठाकुर जी लाभ मोकलो देसी......' , भण्डार भरपूर राखसी....' , रिद्धि-सिद्धि करसी.......' , आदि---आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि हम विश्वासी, आस्थावान, संस्कारी आदि हैं तो, केवल अपने स्वार्थ को लेकर। जब भी हमारी इच्छाओं की आपूर्ति हो जाती है तो हम नास्तिक बन जाते हैं। परम सत्ता से हमारा विश्वास पूर्णरुप से समाप्त हो जाता है। हम अनास्थावान अथवा नास्तिक की बात नहीं करेंगे। यदि चमगादड़ और उल्लू को सूर्य का प्रकाश दिखाई नहीं देता, उसकी सत्ता को वह स्वीकार नहीं करते तो इससे सूर्य का अस्तित्व क्या समाप्त हो जाता है। दुःख तो इस बात का है

कि जो आंशिक रुप से आस्थावान हैं,वह भी प्रसिद्ध शायर की ठीक इस रुबाई की तरह ही हैं :

एक हाथ में क़ुरान और एक में है मदिरा,
कभी पुण्य तो कभी पाप, मैं समय-समय पर कर गुज़रा।
नील गगन के नीचे रह कर, धर्म निभाया यह मैंने,
पूरा काफिर हुआ, न पूरा मुसलमां ही मैं उतरा।।

ऐसे अभागों और कर्महीनों के लिए हम खेद ही प्रकट करें। ऐसे आस्थावान अथवा अनास्थावान और भौतिकवादी इस हवस भरी दौड़ में स्वार्थ सिद्धि के लिए ईश्वर को इच्छापूर्ति की मशीन समझने वाले स्वयं मनन–गुनन करें :

- क्या हम हिन्दु हैं?
- अपने त्रितापों–आदि भौतिक, आदि दैविक तथा आदि दैहिक का हम सत्कर्म, जप, तप, ध्यान, उपासना, कर्मकाण्ड आदि द्वारा विनाश करने का क्या क्रम–उपक्रम कर रहे हैं?
- क्या हम सद्धर्म पालक हैं?
- क्या हम अनार्य नीति के विदूषक हैं?
- क्या हम वैदिक परायण हैं?

- क्या हम धर्म भ्रष्टों अथवा वैदिक वांगमय का उपहास करने वालों का तिरस्कार- परित्याग करने वाले हैं?
- क्या प्रभु-प्रदत्त प्राकृतिक घटकों को जानने तथा उनसे लाभ उठाने का हमने भौतिकवादी विचारधारा से अलग भी कभी प्रयास किया है?
- क्या भूख, रोगादि कष्टों से कलपते दीन-हीन निरीह पशु, पक्षी अथवा अन्य त्रस्त और दयनीय प्राणियों को देखकर हमारा मन करुणा से भरकर रोने लगता है?
- क्या हम स्वीकार करते हैं कि नीति की व्यवस्था दुरुह है और दृश्य भी?
- जीवन निर्वाह के उसके घटक-अन्य, जल, वायु, वनष्पती, पदार्थ, कंकण आदि व्यर्थ ही नहीं बनें? दैवीय सत्ता के इन अनमोल घटकों का क्या निस्वार्थ भाव से भी उपयोग किया जा सकता है?
- धर्म से मोक्ष तो मिलता ही है, धन संपदा व अनेकानेक कार्य भी सिद्ध होते हैं, परन्तु क्या हम वास्तव में धर्म का पालन कर रहे हैं?

हम यदि वास्तव में हिन्दु हैं तो हम निर्विवाद स्वीकार करेंगे कि धर्म-कर्म, धर्म-दर्शन, पूजा-उपासना, जप-तप, साधन-आराधन, लोक-परलोक, आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म, माया-ब्रह्म, साकार-निराकार, निर्गुण-निराकार, द्वैत-अद्वैत, अण्ड-पिण्ड, नीति-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, मंत्र-तंत्र, ध्यान-पराज्ञान, चिन्तन-मनन आदि तथा श्री-विग्रहों से लेकर निराकार ब्रह्म तक का आध्यात्मिक मार्ग क्लिस्ट अर्थात कठिन है- सर्वसाधारण की समझ-पकड़ से सर्वथा दूर!

आज हमारे संस्कार तथा शिक्षा-दीक्षा ऐसी है कि ऋषियों, मनीषियों दैवज्ञों आदि के नीति परक शास्त्रों में हमारी कोई भी रुचि जागृत नहीं हो पाती। भारतीय संस्कृति और वांगमय से हम सर्वथा दूर हैं तथा निरंतर और भी दूर होते जा रहे हैं। यदि हममें श्रद्धा, आस्था, मानवता, सदाचार, लोकहित, दया, न्याय, नैतिकता, प्रकृति के प्रति प्रेम और सबसे ऊपर हिन्दुत्व जाग्रत होने लगे तो नीति परक धर्म ज्ञान आदि क्लिस्ट आध्यात्मिक मार्ग उतना ही सरल-सुलभ होने लगेगा। आध्यात्मिक मार्ग में अहिन्दु मानसिकता के कारण 'खोपड़-खोपड़ भिन्ना' और 'भुण्डे-भुण्डे मतिर्भिन्ना' वाली बातों से भी अज्ञानता तथा अनास्था जन्म लेने लगती है।

हम अहिन्दु लोगों का सबसे बड़े दुभार्ग्य यही है कि भौतिकवादी युग की इस आपाधापी तथा व्यस्तता में धर्म-कर्म, भारतीय वांगमय और संस्कृति को पढ़ने, समझने और तदनुसार उसे जीवन में उतारने का समय ही नहीं है। यदि सौभाग्य से समय मिल जाता है तो परस्पर विरोधी तथा भ्रमात्मक विषय वस्तु पढ़कर अहिन्दुमन की नीरसता, अरुचि, तिरस्कार और उपहास की भावना बलवती होने लगती है।

मानसश्री गोपाल राजू
सम्पादक ''भारतीय अनन्त दर्शन''

ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र (रजि.)
30, सिविल लाईन्स, रुड़की – 247 667
Website: www.astrotantra4u.com